Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor: 4.081
Volume-12, Issue-3, December-2018 www.researchguru.net

# महिला सशक्तिकरण में स्वरोजगार में संलग्न महिलाओं की परिवारिक एवं सामाजिक स्थिति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (बागेश्वर जनपद के विशेष सन्दर्भ में)

कु.सरिता
शोध छात्रा समाज"ाास्त्र, एस.एस.जे.परिसर अल्मोडा (उत्तराखण्ड)। प्रोफेसर इला साह शोध छात्रा समाज"ाास्त्र, एस.एस.जे.परिसर अल्मोडा (उत्तराखण्ड)।

संरा"ा–: आज के बदलते एव परिवारिक परिवे"ा में महिलाओं ने जीवन के प्रतेक क्षेत्र में अपनी योग्यता एवं कु"ालता के आधार पर स्वयं को पुरूषों के समक्ष लाकर खडा कर दिया है। प्राचीन काल से ही महिला एक अच्छे प्रबंधक के रूप में कार्य का निर्वहन करती आयी है। किन्तु जैसा की हम सब जानते है भारत सदेव से ही पुरूष प्रधान समाज रहा है। जिसमें महिलाओं की स्थिति प्रायः दोयम दर्जे की मानी जाती है। अतः ऐसी स्थिति में जहाँ एक ओर महिला अपने कार्यक्षेत्र में एक अच्छा प्रद"ान कर रही है। वहीं आव"यक है, कि उसकी पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति भी उसके अनुकूल हो तभी उसके एवं उसकी योग्यताओं का प्रद"ान स्वभाविक है

keyword–: महिला स"ाक्तिकरण, स्वरोजगार, परिवार, सामाजिक, चुनौतियां, स्वंय सहायता समूह

प्रस्तावना : प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्दे"य महिला स"ाक्तिकरण में स्वरोजगार में संलग्न महिलाओं की परिवारिक एवं सामाजिक स्थिति का एक समाज"ाास्त्रीय अध्ययन करना है। किसी भी दे"ा के विकास में पुरूषों के साथ–साथ महिलाओं का योगदान भी महत्वपूर्ण होता है। ऐसा माना गया है कि, महिलाएँ समाज का अभिन्नअंग होती है। अतः किसी भी समाज का सामाजिक एवं आर्थिक विकास महिला स"ाक्तिकरण के बिना अधूरा है। ''पंडित जवाहरलाल नेहरू'' ने इस सन्दर्भ में कहा है कि, ''यदि आपको विकास करना है तो महिलाओं का विकास होने पर समाज का विकास स्वतः हो जायेगा[1]। वास्तव में महिलाएँ प्राचीन समय में ही परिवार की आय को बढ़ाने में अपना सहयोग देती थी परन्तुतब यह सहयोग प्रत्यक्ष ना होकर अप्रत्यक्ष रूप में होता था, यद्यपि महिलायें पुरूषों पर सदैव निर्भर रही है, परन्तु एक सहायक के रूप में कार्य करती रही है। मानव प्रजाति के प्रारम्भ होने के समय कार्य सोंपे गये है। प्राचीन समय में पुरूष युद्ध करते थे और ि"ाकार करते थे, जबकि महिलाएँ कम खतरनाक और घर के पास के व्यवसाय से जुड़ी रहती थी। कार्यो के स्वयं के इस आधारभूत विभाजन से यह पता चलता है कि, किस प्रकार पुरूष और महिला ने हमे"ाा से ही काम किया है, तथा उसे कुछ नि"चत आर्थिक कार्य निपटाने होते थे।[2] भारत वर्ष एक कृषि प्रधान गाँव का दे"ा है, आज भी 70 प्रति"ात जनसंख्या गाँव में निवास करती है। भारतीय परम्परागत समाज हमे"ाा से पितृसत्तात्मक मूल्यों पर आधारित रहा जिसके कारण महिलाओं की स्वतंत्रता हमे"ाा से अपवाद रही, पारिवारिक आय वृद्धि एवं दे"ा की प्रगति में महिलाओं का हमे"ाा से सहयोग अप्रत्यक्ष ही रहा है। औद्योगिक क्रान्ति के बाद महिलाओं में विभिन्न व्यवसायों से जुडने में तीव्र वृद्धि हुई। जिसमे भारत भी शामिल था हॉलाकि पा"चात्य दे"ाों की तुलना में यह प्रकिया यहाँ विलम्ब से प्रारम्भ हुई। परिवर्तन प्रकृति का अनिवार्य नियम है और इसी के कारण आज महिलाओं का घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर आजीविका हेतु कार्य करने को एक नयी घटना के रूप मे देखा जा सकता है। पितृसत्तात्मक मूल्य, पुरूष वर्चस्व की मानसिकता आदि अनेक कारणों से

भारतीय व्यवस्था के इतिहास में महिलाओ की द"ाा व विषय रही है जिसका प्रमुख कारण समाज व्याप्त संकीर्ण व रूढिवादी विचारधारा को माना जा सकता है।

प्रमिला कपूर ने कार्यरत महिलाओ के विषय में अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हुए स्पष्ट किया है कि वे महिलाएँ जो आर्थिक कारणों से रोजगार अपनाती हैं उनका एक समरूप समूह नहीं है यह केवल निम्न मध्यम वर्ग की ही नहीं होती जो अपने परिवार के अपर्याप्त बजट को पूरा करती है बल्कि ऐसी महिलाएं भी कार्य करती हैं जिनके पति उच्च पद पर होते है। तथा ऊचाँ वेतन पातें हैं।[3] भारत जैसे परम्परागत दे"ा में महिलाओं की व्यवसायिक क्षेत्र मे संख्या अपेक्षाकृत कम है लेकिन विकास एवं प्रगति की दृष्टि से यह सुखद व स्वस्थ प्रकिया है। घर से बाहर निकलकर कार्यक्षेत्र में प्रवे"ा ने महिलाओं के विचारों में तार्किकता, परिवार में सम्मानजनक स्थान, आर्थिक निर्णय कि क्षमता, जीवन साथी का स्वतंत्र चुनाव और ऐसी ही न जाने कितनी अनुकूल अभिवृत्तियों को उनमें विकसित किया है जो आज दे"ा ,घर, परिवार, समाज के विकास के साथ–साथ वर्तमान आव"यकता भी है।किसी भी राष्ट्र के सुट्टढ़ एवं स"ाक्तता के लिए यह आव"यक है कि उसकी पूरी आबादी को समान अवसर प्रदान करना आव"यक है। यह सर्वविदित है कि महिलाएँ पूरी आबादी के आधे हिस्से का प्रतीनिधित्व करती है। यही कारण है, आज स्त्रितियाँ सामाजिक हो, राजनैतिक या आर्थिक महिलाओ कि चर्चा एक विषय के रूप में उभर पड़ती है, समानता ने आज महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव को काफी सीमा तक समाप्त करने का प्रयास कर महिलाओं की द"ाा–दि"ाा में परिवर्तन किया है। आज महिलाएँ घरेलू जिम्मेदारियों के साथ–साथ घर–परिवार की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का कार्य कर रही है और इस क्षेत्र में शहरी महिलाओं के साथ ग्रामीण महिलाऐं भी आगे बढ़ रही हैं। ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्थिति को स"ाक्त बनाने में स्वर्ण जयन्ती स्वरोजगार योजना की महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं।

''महिला स"ाक्तिकरण का अर्थ किसी कार्य को करने या रोकने की क्षमता तथा उनके द्वारा समाज की वर्तमान व्यवस्था और तौर तरीके को चुनौती में भागीदारी, समान कार्य के लिए समान वेतन कानून के तहत सुरक्षा, प्रयास प्रजनन का अधिकार आदि।[4] अर्थात् महिलाओं का स"ाक्तिकरण अनवरत चलनें वाली एक ऐसी गति"ाील प्रक्रिया है जिसका मुख्य उद्दे"य हा"िाए पर के लोगों को मुख्यधारा में लाकर उन्हें सत्ता संरचना में भागीदारी बनाया जा सके। स्वतंत्रता पूर्ण महिलाओं की स्थिति अत्यन्त शोचनीय, शोषण युक्त एवं कुप्रथाओं से घिरी हुई थी, पितृसत्तात्मक एवं लिंग भेद की मानसिकता सर्वत्र व्यक्त थी। जिससे स्थायी विषमताऐं, असन्तोष, तनाव तथा मानवता की हानि जैसी परिस्थियाँ सामने आई और महिलाओं को कमजोर वर्ग में सम्मिलित किया जाने लगा जब की इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि किसी समाज की वास्तविक स्थिति को जानने का सबसे महत्वपूर्ण आधार वहाँ की महिलाओं की स्थिति को जानना होता है जो सम्पूर्ण समाज के आधे हिस्से का प्रतिनिधित्व कर रही हैं।

अध्ययन का उद्दे"य : प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्दे"य महिला स"ाक्तिकरण में स्वरोजगार में संलग्न महिलाओं की परिवारिक एवं सामाजिक स्थिति को देखने का प्रयास किया गया है।

शोध अभिकल्प : शोध अभिकल्प प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्दे"य अन्वेषणात्मक है। अतः शोध हेतु इस अध्ययन में अनवेषणात्मक विवेचनात्मक शोध अभिकल्प का उपयोग किया गाया है, जैसे कि हम जानते है कि, महिलाऐं समाज का अभिन्न अंग होती है, तथा किसी भी समाज का सामाजिक एवं आर्थिक विकास महिला स"ाक्तिकरण के बिना अधूरा है। वर्तमान समय में कई सरकारी तथा गैरसरकारी महिलाएं स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार से योजना के अन्तर्गत स्वरोजगार एवं स्वंय सहायता समूहों द्वारा महिलाओं को स"ाक्त बनाने के लिए अनेको प्रयास किये जा रहे है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में अन्वेषणात्मक शोध अभिकल्प ही उपयुक्त समझा गया।

अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण से भिन्न परिप्रेक्ष्यों जैसे–सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनैतिक दृष्किोण से महिलाओं का अध्ययन कर उनकी एक समाज"ाास्त्रीय व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

प्रस्तुत अध्ययन को निद"ार्ा पर आधारित किया है, प्रस्तुत अध्ययन बागे"वर जनपद के तीन ब्लॉक बागे"वर, कपकोट तथा गरूड़ ब्लॉक पर आधारित है। ब्लॉक से लिए गये ऑकड़ो के अनुसार बागे"वर ब्लॉक से लिए गये 208, कपकोट ब्लॉक में 228 तथा गरूड़ ब्लॉक में 274 (710) महिलाएँ स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना 1999 के अन्तर्गत स्वयं सहायता समूहो में जुडकर स्वयं के स्वरोजगार में कार्यरत है। संख्या अधिक होने के कारण समग्र रूप से इन्हें अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया जा सकता है। अतः अध्ययन हेतु दैव निद"ान पद्वति का उपयोग कर निदे"ार्ा चयन का निर्णय लिए गया।

अतः निद"ार्ा के रूप में 710 का 50 प्रति"ात महिलाओं का चयन किया जायेगा यह चयन लॉटरी पद्धति द्वारा होगा अतः प्रस्तुत अध्ययन कुल 355 अध्ययन इकाईयों पर आधारित है।

प्रस्तुत अध्ययन मुख्य रूप से प्राथमिक ऑकड़ो पर आधारित होगा तथा ऑकड़े एकत्र करने के लिए मुख्य रूप से साक्षात्कार अनुसूची तथा आव"यकतानुसार असहभागी अवलोकन पद्धति का उपयोग किया गया है।

उपलब्धियाँ :

समाज में परिवार अत्यधिक महत्पूर्ण सर्वव्यापी व आव"यक संस्था है। कुमाऊँ में भी पितृसत्तत्मक परिवारों की प्रधानता रही है जहाँ महिलाओं को पुरूषों के अधीन रहतें हुए परम्परागत मूल्यों का पालन करता आव"यक था लेकिन बदलति परिस्थितियों मे महिलओं को भी उनके अधिकारों की प्राप्ति हुई है,जो पुरूषों को प्राप्त है, यही कारण है कि आज महिलाऍ घर से बाहर निकलकर विभिन्न कार्यो को अपना रही है

अतः इसी निरन्तरता में यह जानना आव"यक है, कि प्रतिकूल परिवारिक परिस्थियों में महिलाओं के पति उनका साथ देते है कि नहीं निम्न सारणी द्वारा इसी मत के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण किया गया है।

प्रतिकूल परिवारिक परिस्थितियों मे पति द्वारा सहयोग दिये जाने के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के मत

सारणी संख्या – 1.1

| क्रम संख्या | प्रयुत्तर का स्वरूप | आवृति | प्रति"ात |
|---|---|---|---|
| 1 | हाँ | 265 | 74.65 |
| 2 | नहीं | 44 | 12.39 |
| 3 | कभी–कभी | 46 | 12.96 |
| 4 | योग | 355 | 100.00 |

जैसा कि सारणी से स्पष्ट होता है, कि सर्वाधिक उत्तादाताओं (74.65 प्रति"ात) ने यह स्वीकार किया है, कि प्रतिकूल परिवारिक परिस्थितियों मे पति द्वारा पूर्ण सहयोग प्रदान किया जाता है। जबकि 12.39 प्रति"ात उत्तरदाताओं ने इस स्थिति को अस्वीकार किया है।

प्राचीन काल से ही महिलाएं किसी भी समाज का एक महत्पूर्ण अंग मानी जाती है। परिवार जो कि समाज की एक मौलिक इकाई है। महिलाएं उसकी धुरी मानी जाती है। अतः अध्ययन में यह जानना आव"यक हो जाता है, कि उत्तरदाताओं से महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति के बारे में जाना जाये। इस सन्दर्भ में हमारें उत्तरदाताओं के सकारात्मक मत महिलाओं को समाज का महत्वपूर्ण अंग होने की पुष्टि करतें है। जैसा कि निम्न सारणी से स्पष्ट होता है।

महिलाऐं समाज का महत्वपूर्ण अंग होती है, के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं के मत

सारणी संख्या – 1.2

| क्रम संख्या | प्रयुत्तर का स्वरूप | आवृति | प्रति"ात |
|---|---|---|---|
| 1 | हाँ | 355 | 100.00 |
| 2 | नहीं | – | – |
| 3 | कह नहीं सकतें | – | – |
| 4 | योग | 355 | 100.00 |

सरणी के अनुसार शत प्रति"ात उत्तरदाताओं का माना है, कि महिलाऐं समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती है।

जैसा कि हम सब जानते है, कि ग्रामीण समाज सरल समाज माना जाता है। जिसके कारण सामाजिक तथा व्यवसायिक गति"ीलता प्रायः धीमी गति की होती है। महिलाओं के सन्दर्भ में यदि बात कि जाए तो कुमाऊँ जैसे पिछडे क्षेत्र में यह न्यूनतम हो जाती है। किन्तु वर्तमान परिवे"ा में समाज धीरे–धीरे परिवर्तित हो रहा है। महिलओं कि सुरक्षा, राष्ट्र की मुख्य धाराओं से जोडने, सामान्ता तथा सामाजिक एवं आर्थिक स"ाक्तिकरण के लिए नीती नई योजनाएं तथा अधिनियमों का निर्माण हो रहा है। जिसमें स्वयं सहायता समूह एक स"ाक्त माध्यम हैं।

प्रस्तुत सारणी में भी सर्वाधिक उत्तरदाओं द्वारा इस मत को स्वीकार किया गया है जैसा कि निम्न सारणी से स्पष्ट होता है।

स्वयं सहायता समूहों में कार्य के माध्यम से महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में उत्तरदाताओं के मत

सारणी संख्या – 1.3

| क्रम संख्या | प्रयुत्तर का स्वरूप | आवृति | प्रति"ात |
|---|---|---|---|
| 1 | हाँ | 344 | 96.90 |
| 2 | नहीं | 07 | 1.97 |
| 3 | कह नहीं सकतें | 04 | 1.13 |
| 4 | योग | 355 | 100.00 |

उपरोक्त सारणी के आधार पर कहा जा सकता है, कि सर्वाधिक उत्तरदाता ( 96.90 प्रति"ात )का मानना है, कि स्वयं सहायता समूहों में कार्य करने के प"चात् महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में परिवर्तन हुवा है। जबकि 1.97 प्रति"ात उत्तरदाता ऐसे है, जिन्होंने इस सन्दर्भ में अपना कोई भी मत व्यक्त नहीं किया है।

भारतीय संविधान द्वारा महिलाओं को समानता के अधिकार दिये गए है। यदि अपवादो को छोडें तो संमग्र रूप में समाज के प्रतेक क्षेत्र अभी भी समानता प्राप्त नहीं हुवे है, संविधान द्वारा संवैधानिक अधिकारों के मिलने के प"चात् भी महिलाओं कि सामाजिक, आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर है। कई अध्ययन इस बात की पुष्टि करते है, कि आज भी महिलाओं को निर्णय लेने कि स्वतन्त्रता तथा पैत्रिक सम्पन्ति में किसी प्रकार का अधिकार होता है। साथ ही समाज एक ओर बेटे की अनिवार्यता के पक्ष में है। उन्हीं पुत्री में भी भेदभाव किया जाता रहा है। इन सब के साथ एक चिन्ता जनक विषय यह है,कि महिलाओ को समाजिक तौर पर पुरूष के समान स्थान देने के पक्ष में समाज तैयार नहीं होता है।

निम्नांकित सारणीयों में उत्तरदाताओं के इसी मतों के सन्दर्भ में वर्गीकरण किया गया है।

स्वयं निर्णय लेने की स्वतंत्रता के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं के मत

सरणी संख्या– 1.4

| क्रम संख्या | प्रयुत्तर का स्वरूप | आवृति | प्रति"ात |
|---|---|---|---|
| 1 | हाँ | 310 | 87.32 |
| 2 | नहीं | – | – |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 3 | कभी–कभी | 45 | 12.68 |
| 4 | योग | 355 | 100.00 |

जैसा कि सारणी से स्पष्ट होता है,कि सर्वाधिक उत्तरदाताओं ( 87.32 प्रति"ात ) ने स्वीकार किया है,कि उन्हें स्वयं निर्णय लेने कि पूर्ण स्वतन्त्र प्राप्त है। इसके विपरीत 12.68 प्रति"ात उत्तरदाताओं को कभी–कभी स्वयं निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्राप्त है। इसी निरन्तरता में यह जानना भी अव"यक है,कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था वाले परिवारों में महिलाओं को पैत्रिक सम्पन्ति में अधिकार होना चाहिए या नहीं

निम्न सारणी में इसी मत को स्पष्ट किया गया है।

पैत्रिक सम्पन्ति में महिलाओं के अधिकार के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं के मत

सारणी संख्या–1.5

| क्रम. संख्या | प्रयुत्तर का स्वरूप | आवृति | प्रति"ात |
|---|---|---|---|
| 1 | आं"ाक सहमत | 12 | 3.32 |
| 2 | सहमत | 338 | 95.21 |
| 3 | असहमत | 05 | 1.41 |
| 4 | योग | 355 | 100.00 |

सारणी के आधार पर स्पष्ट होता है, कि 95.21 प्रति"ात उत्तरदाता इस मत से सहमत तथा 3.32 प्रति"ात उत्तरदता आं"ाक रूप से सहमत है,कि पैत्रिक सम्पन्ति में महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए। किन्तु अनौपचारिक वर्तलाप से स्पष्ट हुवा है, कि आज भी समाज पूर्णतः पारम्परिक ही है। क्योंकि समाज में पैत्रिक सम्पन्ति पर केवल पुरूषों का ही अधिकार है महिलाओं का नहीं। इसी श्रृंखला में यह जाना भी आव"यक है, कि उनकी कार्य करने के कारण सामाजिक स्थिति किस प्रकार कि है।

निम्न सारणी में उनकी समाजिक स्थिति को देखने का प्रयास किया गया है।

स्वयं के रोजगार से समाज के लोगो के दृष्टिकोण के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के मत

सारणी संख्या – 1.6

| क्रम. संख्या | प्रयुत्तर का स्वरूप | आवृति | प्रति"ात |
|---|---|---|---|
| 1 | उत्साहपूर्ण | 90 | 25.35 |
| 2 | सम्मान–जनक | 143 | 40.28 |
| 3 | हेय–दृष्टिय सेदेखना | 53 | 14.93 |
| 4 | तटस्थ | 69 | 19.44 |
| 5 | योग | 355 | 100.00 |

सरणी के आधार पर कहा जा सकता है, कि अधिकां"ा (40.28 प्रति"ात) उत्तरदाताओं का मानना है, कि रोजगार से जुडे होने के कारण समाज के लोग उन्हें सम्मान जनक दृष्टिकोण से देखते है। इसी निरन्तरता में यह जानना भी आव"यक है, कि समाजिक व परिवारिक तौर पर स्वरोगार के लिए प्रोत्साहित करने वाले कौन–कौन सदस्य है। निम्नांकित सारणी के आधार पर इसी तथ्य को लेकर उत्तरताओं का वर्गीकरण किया गया है।

रोजगार के लिए प्रोत्साहित करने वाले सदस्यों के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के मत

सारणी संख्या – 1.7

| क्रम. संख्या | प्रयुत्तर का स्वरूप | आवृति | प्रति"ात |
|---|---|---|---|
| 1 | माता –पिता | 54 | 15.21 |
| 2 | सास–ससुर | 36 | 10.14 |
| 3 | पति | 112 | 31.55 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 4 | स्वयं का निर्णय | 153 | 43.10 |
| 5 | योग | 355 | 100.00 |

उपरोक्त सारणी के आधार पर कहा जा सकता है, कि अधिकां"ा उत्तरदाताओं (43.10 प्रति"ात) का रोजगार में आने से का निणर्य स्वयं का है। इसके विपरीत केवल (10.14 प्रति"ात ) उत्तरदाता ऐसे है, जिनको उनके सास–ससुर द्वारा रोजगार के लिए प्रेरित किया गया है, कि सारणी के आधार पर कहा जा सकता है, कि महिलाओं ने अपनी योग्यता एवं कु"ालता को पहचान कर उसे सिद्ध करने का प्रयास किया है। साथ ही आर्थिक रूप से स"ाक्त होने के लिए एक लक्ष्य कि ओर दि"ाा का निर्धारण किया है। यही कारण है, कि अधिकां"ा महिलाओं से इस बात कि पुष्टि भी होती है, कि एक अच्छा जीवन स्तर के चाह में स्वयं पति भी चाहता है, कि उसकी पत्नी आर्थिक रूप से स"ाक्त हो तथा परिवार की आय को बढाने में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें। यही कारण है, कि 31.35 प्रति"ात उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया है, कि रोजगार में जुडने के लिए उनके पति द्वारा उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है।

निष्कर्ष :

सारां"ा रूप में कहा जा सकता है, कि जिला बागे"वर के तीन ब्लॉकों–बागे"वर ब्लॉक, गरूड ब्लॉक, कपकोट ब्लॉक में वर्तमान में पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवस्थाएं भी धीरे–धीरे परिवर्तित हो रही हैं। क्योकि परिवार कि समस्त जिम्मेदारी पुरूष तथा महिला दोनों समान रूप से उठाऐं जा रहे है। शायद यहीं कारण है, कि आज अधिकां"ा पुरूष उन्हीं महिलाओं से विवाह करना आव"यक मानते है जो कार्यरत् हो या आर्थिक रूप से स"ाक्त हो। महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता ने महिलाओं में समाजिक एवं व्यवसायिक गति"ाीलता को बढावा दिया है। जिसके परिणामस्वरूप महिलाएं अपने कार्य से सम्बन्धित दायित्वों के निर्वहन के लिए घर से बाहर एकले जाने लगी है, प्रतिकूल परिवारिक परिस्थियों में महिलाओं के पति उनका साथ देते है, स्वयं सहायता समूहों में कार्य करने के प"चात् महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में परिवर्तन हुवा है। तथा रोजगार करने के प"चात् समाज के लोगो का दृष्टिकोण उनके लिए बदला हैं स्वंय सहायता समूह से जुड़ने के प"चात् अपने आपको संगठित करने की क्षमता काफी हद तक बढ़ी है, जो स"ाक्तिकरण की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

सुझाव :

- स्वयंसेवी संगठन को प्रभावी बनाना।
- महिला विकास कार्यक्रमों की जानकारी ग्राम्य स्तर तक स्थानीय भाषा में प्रसारित करना।
- उत्पादिन वस्तुओं के वितरण, विपरण एवं व्यापक में भागीदारी करना।

सन्दर्भ सूची

1 कुरूक्षेत्र अक्टूबर 2014 पे.न.–25

2 Chauhan India Purdah to Babessian- P.N.-183

3 Kapoor promila,marriage and working women in india, vikash,new dehlhi. P.n.-47-49

4 महिला सशक्तिकरणः कुछ अनसुलझे पहलू दिनेश कुमार एवं बजरंग भूषण, कुरूक्षेत्र मार्च–2006 पृ0–10